वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2024

- *देव वाणी*
- *मुख्य साधन*
- *मेरे सौभाग्य या महा सौभाग्य*
- *सच्चे और झूठे धर्म साधन*
- *आपकी ज्योति में नज़र आवे हक़ीकत रूह की*
- *मैं अपने धर्म साधनों के लिए अपने हृदय को किस विधि से तैयार किया करूं?*
- *मैं अपने धर्म साधनों की सफलता वा निष्फलता को क्योंकर जान सकता हूँ?*
- *कल्याण में माता पिता सन्तान व्रत*
- *केसूपुरा स्कूल में माता पिता दिवस*
- *निज का साधन करने की आवश्यकता*

देव वाणी

यदि देव प्रभाव दायक साधनों में बैठकर कुछ ज्ञान साफ होता हो और कुछ अपनी नीचता वा हीनता देखने वा किसी शुभ भाव की सुन्दर तस्वीर सामने लाने का अवसर मिलता हो, तो फिर ऐसे साधनों में लगातार योग देने की नितान्त आवश्यकता है।

सम्मिलित सभाओं के भिन्न सबसे बढ़कर अपना निज का साधन काफी मिकदार में और काफी अरसा तक करने की नितान्त आवश्यकता है और इस साधन में प्रतिदिन अपनी कोई हीनता वा नीचता देखकर घृणा और दुख बढ़ाने की नितान्त आवश्यकता है। यदि प्रतिदिन इस प्रकार से घृणा और दुख पैदा होता रहे और काफी मिक़दार में पैदा होता रहे, तो संभव है कि वह नीच गति बिल्कुल ही नष्ट हो जाए।

इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने ऊपर दंड लेने की आवश्यकता है। जिन्दगी साधन और संग्राम की वस्तु है। जिन्दगी बनाने के लिए रोने धोने, दुखी और शर्मसार होने की आवश्यकता है यह घृणा व दुख बढ़ाने का साधन, ताप अग्नि में से गुजरने का साधन है।

संगरूर में सत्संग

जैसा कि पहले सूचित किया जा चुका है। 8, 9, 10 मार्च को संगरूर में सत्संग होगा। कल्याण सत्संग में बहुत सारे धर्म सम्बन्धी पधारे और बहुत लाभ उठाकर गए, आशा है अब भी प्रभाव-दायक मण्डल बनेगा, जो धर्म सम्बन्धियों द्वारा आपस में मिलकर ही बनता है, आपसे विनम्र निवेदन है कि आप स्वयं पधारें और जिन जनों को लाना सम्भव हो, उन्हें लाकर अपना और उनका भला करें।

देव समाज प्रबन्ध की ओर से

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 35 अंक 3
मार्च – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

मुख्य साधन

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव विकास क्रम का अदभुत शाहकार वा देन है। मनुष्य जीवन की सफलता को उनके सम्बन्ध पर नेचर ने पूरा-पूरा निर्भर रखा है। जिस प्रकार मनुष्य का शरीर, हवा, पानी व खुराक पर पूर्णत: निर्भर है, उसी प्रकार मनुष्यात्मा की रक्षा और विकास देवात्मा के देव प्रभावों पर पूर्णत: निर्भर है।

मनुष्य को देवात्मा की शरण प्राप्त होना, उसका सबसे बड़ा और परम सौभाग्य है। देवात्मा का सेवक बनना, उनकी शिक्षा का शिक्षार्थी बनना, उनके मिशन में सेवाकारी बनना और उनके मिशन का प्रचारक बनना किसी भी मनुष्य का अतिशय महान अधिकार और सौभाग्य है।

इस महा सौभाग्य की पूर्ण सफलता केवल मिथ्या देवी देवते, ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरू के विश्वास को छोड़ने और मोटे निर्धारित पापों से बचने या कुछ मिशन के लिए कुर्बानी व सेवा करने से नहीं हो सकती। (बेशक इससे भी काफी भला होता है।) इसकी सफलता विशेष योग्यता के पैदा होने से सम्बन्धित है। यह योग्यता है। देवात्मा के अद्वितीय देव जीवन के देव प्रभावों को प्राप्त कर सकने की और उसको बढ़ाने की है। देवात्मा रूहानी जगत के सूर्य प्रगट हुए हैं, उस सूरज की रोशनी तक पहुंच पाने की इच्छा और योग्यता परम आवश्यक है। देवात्मा के परम कल्याणकारी देव प्रभावों तक रसाई प्राप्त करने के लिए जो साधन अत्यन्त आवश्यक हैं, वही साधन परम आवश्यक साधन हैं और हम सबके लिए यही मुख्य साधन हैं।

प्रश्न पैदा होता है कि हम जो साधन करते हैं गुरू महाराज की प्यारी फोटो लेकर, उसको साफ करके फूलों से सजाकर, महिमा के गीत गाकर, पूजनीय देव स्तोत्र गाकर, सत्गुरू को बार-बार प्रणाम करके, उनसे देव प्रभावों के लिए भिक्षा मांग कर और फिर उनके पूजनीय ग्रंथों में से पाठ करके, जो साधन करते है, वह साधन मुख्य साधन नहीं? यह साधन हैं तो बहुत आवश्यक, परन्तु अक्सर यह साधन एक अभ्यास बन जाते हैं, कभी-कभी कुछ प्रभाव भी मिल जाते हैं, परन्तु इन साधनों को पूर्ण सार्थक बनाने के लिए हमें अक्सर वा हर रोज़ देवात्मा की महा हितकर वा अलौकिक ज्योति मिल सके, इसके लिए एक अन्य साधन करना और भी आवश्यक है, वह साधन जिससे देवात्मा के देव प्रभावों तक ठोस रसाई हो सके, वह

साधन एक मुख्य साधन है।

शायद महान साधक श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज का ही भजन है, जिसमें मुख्य साधन की बात की गई है, और कहीं मुख्य साधन का ज़िकर कम ही देखने को मिलता है, उन्होंने फरमाया है :-

जीवन के सारे लाभों से धर्म का लाभ बढ़कर है,
तुम्हारी ज्योति दिखलावे, तुम्हारी ज्योति मिल जावे।
तुम्हारी ऐसी ज्योति की, मुझे अतिशय ज़रूरत है,
तुम्हारी ज्योति मिल जावे, तुम्हारी ज्योति मिल जावे।
तुम्हारी ज्योति पाने का, कौन सा मुख्य साधन है,
तुम्हारी ज्योति दिखलावे, तुम्हारी ज्योति मिल जावे।

इसलिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों तक रसाई पाने के लिए लगभग सब मनुष्यात्माओं को इस मुख्य साधन के (केवल एक अनुरागी बनने की योग्यता रखने वाली श्रद्धेया जी जैसी महान रुहों को छोड़कर) बहुत गंभीरता से जानने की और अपनी योग्यता के अनुसार जीवन भर पूरे करते रहने की बहुत आवश्यकता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज इस सम्बन्ध में अपना अनुभव लिखते है :-
"यह बात बहुत स्पष्ट रूप से सामने आ सकती है, कि मैं परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले आत्म अन्धकार में इस कदर लिप्त और नीच गति दायक शक्तियों के महा विनाशकारी अन्धकार में इस कदर ग्रस्त था, कि पूजनीय भगवान की शरण ग्रहण करके और लगातार उनके श्री चरणों में रहकर भी मुझे उनकी आत्म प्रकाशक देव ज्योति के प्राप्त करने, उस ज्योति में अपनी आत्मिक असल अवस्था को देखने और अपने अन्दर की नीच गति दायक शक्तियों का प्रकृत बोध प्राप्त करने में वर्षों लग गए। मैं वर्षों तक क्या दूसरे सम्बन्धियों के सम्बन्ध में और क्या परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की घृणित और महा विनाशकारी गतियां करता रहा और उन गतियों को करके वर्षों तक मुझे साधारणत: यह भी पता नहीं लगा कि मैं कोई नीच गतियां करता हूँ (इसके लिए 12 - 15 वर्ष लग गए) इस बात से अनुमान लग सकता है कि यदि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को गुरु महाराज की ज्योति तक स्थाई पहुंच प्राप्त करने के लिए इतने लम्बा समय लग सकता है, तो हम साधारण आत्माओं का क्या हाल हो सकता है? श्रद्धेय श्रीमान जी ने लगभग अपने अन्तिम सांस तक मुख्य साधन को अपनाए रखा। जब उन्हें गुरु महाराज जी ने यह साधन करने के लिए फरमाया था। वह मुबारक दिन मई 1904 का था।

जैसे चीन और रूस की बर्फ जैसी शीतल हवाओं को हिमालय भारत आने से रोके रखता है, उसी प्रकार हमारा तकरीबन सब मनुष्यों का अहं अनुराग विशेष रूप से घमंड और नीच घृणा देवात्मा के देव प्रभावों को हमारे तक पहुंचने में दीवार बनकर रोके रखते हैं। देवात्मा की देव ज्योति और शक्ति की प्राप्ति के सम्बन्ध में इससे बड़ी और भयानक और कोई रोक नहीं। जितना कोई मनुष्य अहं अनुरागी होता है, उतना ही वह अपने आपको इससे युक्त देखता है। देव ज्योति के बिना जो कुछ मनुष्य वास्तव में है, उस वास्तविकता को देख नहीं सकता, और जो कुछ मनुष्य है नहीं, वह कुछ वह अपने आपको समझता और विश्वास करता है।

सब मनुष्य बचपन से ही अहं के अनुरागी बनने शुरू हो जाते हैं और फिर सारी उम्र अहं - अनुराग बढ़ता जाता है।

मनुष्य सुख अनुरागी है। सुख अनुरागी होना, पाप परायण होना या झूठ परायण होना एक ही बात है। मनुष्य का पापी, अपराधी, नीच दुर्बल और झूठा होना आवश्यक है। अपने आपको झूठमूठ अच्छा, ठीक, बढ़िया, महान और निर्दोष देखने और दिखाने में मनुष्य को सुख मिलता है, तृप्ति मिलती है। यह सोच सारी उम्र पक जाती है और मनुष्य को घोर अहं अनुरागी बना देती है। अपने आपको खराब सोचने में मनुष्य को दुख मिलता है, उसे नागवार गुज़रता है, इसलिए मनुष्य अपने आपको खराब और बुरा नहीं देख पाता।

अहं अनुराग के पहाड़ को अपने और देव ज्योति के बीच में से हटाना और घटाना ही मुख्य साधन है। जो यह कर सकता है, वह देव ज्योति तक अपनी योग्यता के अनुसार स्थाई रसाई कर सकता है। अपने झूठे, बुरे, नीच, अपराधी, निर्दयी, दोषी और स्वार्थी, लालची और कपटी रूप को बार-बार देखना और उसके ऊपर लगातार लिखना ही अपने सम्बन्ध में बढ़े हुए मिथ्या विश्वास को अथवा अहं अनुराग को घटा सकता है और योग्यता के अनुसार इससे मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जो यह साधन जो कि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अपनाया था, निष्ठापूर्वक 6 महीने दिली भावों से कर सकता है, उसको इसके मुख्य साधन होने की यर्थाथता की भी समझ आने लगती है। देवात्मा की ज्योति को प्राप्त करना, अपने आपको वास्तविक रूप में जानने, अपने अदृश्य अहं अनुराग को घटाने और अद्वितीय देवरूप के दर्शनों का महासौभाग्य इस मुख्य साधन को अपनाए बिना प्राप्त नहीं हो सकता।

यह मुख्य साधन कैसे करना है और कैसे लिखना है, इस सम्बन्धी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अपने भाई श्रीमान हितैशी सिंह जी को एक विशेष पत्र में लिखा था।

हम मनुष्य सब ही नीच अनुरागी वा नीच घृणाकारी हैं। जब से ही हम होश सम्भालते हैं, उन भावों द्वारा सदा नीच गतियां करते रहते हैं। अपनी उन नीचता या नीच गतियों का घृणित, घिनौना और हानिकारक रूप सामने लाकर प्रतिदिन घण्टा भर के लगभग लिखा जाए।

हम स्वाद अनुरागी हैं। अपने स्वाद के अनुराग से बचपन से लेकर किस प्रकार आवश्यकता से अधिक खाया है, फिर चूर्ण या हाजमोला की गोलियां खानी पड़ी हैं, बिमारियाँ मोल ली हैं, किसी को कुछ खाता देखकर कैसे दिल ललचाता रहा है, कैसी कामनाएं उठती रही हैं और इसकी तृप्ति के लिए कैसी-कैसी दोस्ती बनाई है, कैसे चोरी करके भी खाते रहे हैं, किस प्रकार उल्टियां लगी हैं, पेट खराब हुआ है, दिल के रोग लगे हैं, डाक्टरों के पास धन लुटाया है, आखें खराब हुई हैं, कई प्रकार के दुःख और घाटे उठाए हैं। इसके कारण कितने शुभ कामों में रुकावटें आई हैं आदि आदि। इस प्रकार अपनी दयनीय हालत को याद करके विस्तारपूर्वक लिखना।

हम काम अनुराग के दास हैं, इस वासना ने बचपन से लेकर अब तक क्या-क्या अदना और घृणित नाच नचाए हैं। हमारा मन नीच लालसाओं से भरा हुआ है। किस प्रकार अशिष्ट,

अभद्र, अश्लील अथवा मलीन विचारों और क्रियाओं से अपने आपको नीच बनाया है? हमारी क्या - क्या चिन्ताएं अथवा सोचें रही हैं, क्या - क्या विकार, कलंक या बदनामी या भृष्टता से बदहाल हुए हैं? एक - एक अस्तित्व के प्रति आकर्षण ने हमें किस प्रकार के नाच नचाएं हैं? हमारी आँखें वा चिन्ताएं कब - कब मैली हुई हैं? क्या - क्या अशिष्ट इशारे वा हावभाव पेश किए हैं? किस प्रकार सेहत, धन, शिक्षा वा कामकाज में हानियां उठाई हैं? किस प्रकार इस वासना ने वहशी बनाया है और पर सुख, पर इज्जत, पर शान्ति की हानि की है? किस - किस को दुःख पहुंचाए हैं, ऐसी सब गतियां स्मरण करके लिखी जाएं।

धन अनुराग के हाथों क्या - क्या क्रियाएं हुईं? कहां - कहां ख़्याल ख़्याल में बेईमान बने? कहां - कहां बेईमानी की, चालाकी की, धोखा व अन्याय किया? हक अपहरण, हेरा - फेरी व मिलावटें की, लालच में आकर झूठ बोले, प्रलोभनों द्वारा हेरा - फेरियां की हैं? कम तोलने, अधिक पैसे लेने, कपटता और फरेब की गतियां की हैं? इसको लेकर सम्बन्धों में कड़वाहट, टकराहट और दूरियां पैदा की हैं। दूसरों के साथ लड़ाई - झगड़े करके अपमान करने, सीधे सादे इन्सानों को ठगने, लूटने, चकमा देने, थोड़ी कीमत की चीज़ का अधिक मोल लेने, थोड़े काम के लिए अधिक पैसे वसूल करने आदि की चिन्ताओं व क्रियाओं को याद करके उन्हें बार - बार लिखना।

हमने दूसरों को लताड़ा है, उनका अनादर व अपमान किया है, उनको कोसा है, नजायज़ टोका - टाकी की है, दोष निकाले हैं, दुःख दिया है, हाथ उठाया है, बच्चों को मारा है, पत्नी को झिड़का व बुरा भला कहा है, झगड़े किए हैं, ज़्यादतियाँ की हैं, अनर्थ व जुल्म किए हैं दूसरों को सताया, तड़पाया है और अन्य अन्यायकारी और अपहरणकारी कर्म किए हैं, उन सबको याद करके उन्हें बार - बार लिखना।

जीव हत्या की गतियां, रक्त बहाने की गतियां, मुर्गे, बकरे, खरगोश आदि की हत्या। बेरहमी से किए हुए जुल्मों को याद करना और लिखना कि कैसे उन्हें खा खाकर पेट को कब्रिस्तान बनाया है?

अपने उपकारी माता पिता, अध्यापकों और उपकारियों और सहायकारियों को सताना, उन्हें गन्दा बोलना, अपमान करना, दुःख देना आदि गतियों को स्मरण करके बार - बार लिखना।

इसी प्रकार नीच अनुरागों से प्रेरित हो कर की गई गतियाँ, विशेष रूप से ईर्ष्या व द्वेष से झूठे आरोप लगाकर, उन्हें सताकर जिन जिन हृदयों को जो आघात पहुंचाए हैं, उन्हें याद करके बार बार लिखना।

इस प्रकार इन साधनों को प्रतिदिन करके अपने नीच घृणित रूप को अनुभव करने, उस पर शर्मसार होने और फटकार महसूस करने का साधन ही मुख्य साधन है। इस साधन को कम से कम 6 महीने करने के बाद इसकी कीमत का पता भी चल जाएगा और परम पूजनीय भगवान की ज्योति भी मिलने लग जाएगी, फिर हिताकांक्षी मनुष्य इसको छोड़ना भी नहीं चाहेगा।

काश! अधिकारी जन अधिक से अधिक इस साधन को ग्रहण कर सकें। इसी मुख्य साधन में ही हम सबका शुभ है। समाज का और हमारे परिवार का भला भी इसमें निहित है।

- श्रीमान बलदेव सिंह जी

मेरे सौभाग्य या महा सौभाग्य

वैसे तो मेरे जन्म से पहले ही महान उपकारियों की कृपा से मेरे पिता जी को और फिर माता जी को अद्वितीय आविर्भाव परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण प्राप्त हो गई थी परन्तु बचपन में इस बात की न कोई समझ थी और न ही कोई कदर। उल्टा बढ़ती जवानी के जोश और अहं का पुतला होने के कारण, मैं इस सौभाग्य की बहुत बेकदरी और निरादर करने का घोर पाप करता रहा हूँ। हां, कई वर्ष भिन्न - भिन्न प्रकार के मिथ्या साधन व पूजा पाठ करने में धक्के खाता रहा हूं और पिशाच कामनाओं का भागी बनता रहा हूँ।

18 - 19 वर्ष की उमर में मुझे सहायकारियों की कृपा से "मुझ में देव जीवन का विकास" नामक ग्रन्थ को प्राप्त करने और उसका साधारण पाठ करने का पहले पहल शुभ अवसर प्राप्त हुआ। मेरे महा अबोधी होने के बावजूद उस महान ग्रन्थ के पाठ से मुझे परम पूजनीय भगवान के विषय में जानना और उनके मिशन की महानता को देखना अपना बहुत बड़ा सौभाग्य अनुभव हुआ। मैं पूजनीय भगवान की फोटों को प्राप्त करके, उसे देखने का सौभाग्य पाकर बहुत कतार्थ हुआ करता था। उस समय मैं कुदरत का शुक्रगुज़ार होता था कि यदि मेरी आंखे न होती, मैं अन्धा होता तो मैं ऐसे महान सत्गुरू के फोटो द्वारा भी दर्शन कैसे कर सकता था। मैं आंखें देने वाले और सम्भालने वालों का कृतज्ञ अनुभव करता रहता था। साथ ही मुझे वैज्ञानिकों का भी बड़ा उपकार महसूस होता था, जिन्होंने कैमरे का अविष्कार किया जिससे पूजनीय भगवान की सही सही फोटो लेनी सम्भव हो सकी। कैमरे के बिना पूजनीय भगवान की सुन्दर छवि के दर्शन भी असम्भव थे। कैमरा बनाने वाले महान वैज्ञानिक भी उपकारी नज़र आने लगे। उन्हें मन मन में धन्यवाद भी देता रहता था। विशेष रूप से यह भी सोचता था, कि और किसी भी गुरू की तस्वीर असली नहीं, सब कल्पित हैं। गुरू नानक देव जी साहिबान, श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी, महात्मा बुद्ध जी का बुत, ईसा मसीह साहिब, जैन गुरू साहिब आदि सब की फोटो असली नहीं कल्पित हैं और तरह तरह की हैं। परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा की फोटोज़ सब असली हैं। उनकी छवि को देखकर जब आंखें बन्द करते हैं, तो हमारी कल्पना में गुरू का भौतिक रूप भी बनता है, उसे हम प्रणाम करते हैं, इसमें किसी कल्पना की गुजांईश नहीं और न ही मनघड़ंत है।

बहुत वर्ष पहले बेशक मुझे देवात्मा बहुत महान और यक़ता दिखाई देने लगे थे, उनकी प्रकाशक शुभ और सत्य अनुराग की शक्तियों की कुछ मानसिक समझ भी आ गई थी। उन जैसा कोई और दिखाई नहीं देता था। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का निज का स्वरूप, उनकी शिक्षा, उनका अद्वितीय लक्ष्य और उनका कारज विलक्षण दिखाई देते थे और उनके कारज में काम आना अपनी बहुत बड़ी खुशकिस्मती दिखाई देती थी। इससे पाक और सच्ची खुशी से हृदय भर जाता था। मैं इसी अवस्था में चाव भाव से

गुरू मिशन में काम करता रहा और अपना भला करने का संग्राम करता रहा। गुरु मिशन का उच्च श्रेणी का सेवक, फिर कर्मचारी भी बन गया, फिर महान आत्माओं ने और ऊँचे पदों पर उन्नत कर दिया। मुझ से प्रचार का काम करवाया। मैंने लेख लिखे, पत्रिकाएं लिखीं, शिक्षा संस्थानों और मन्दिरों में सेवाकारी होता रहा। महोत्सव पर विशेष सभाएं करवाने का शुभ अवसर मिलता रहा, मुझे देवात्मा की महानता चाहे कितनी ही सुन्दर दिखाई देती थी, परन्तु मुझे 60 - 65 वर्ष की उम्र तक देवात्मा के देवरूप का पता भी न चला। मुझे मानसिक समझ के साथ जितना कुछ देवात्मा महान दिखाई देते थे, उस महानता को देख कर ही तृप्त होता रहा।

प्रश्न पैदा होता है कि मुझे इतनी देर तक इतना समाज का काम करके और इतनी देर गुरु के कारज में भाग दौड़ करके देवात्मा के प्रकृत रूप के दर्शन क्यों नहीं हुए? देव रूप के दर्शन देवात्मा की विशेष मात्रा में देव ज्योति की प्राप्ति से ही सम्भव हैं, केवल मानसिक ज्योति वा सात्विक पूंजी में देवात्मा महान तो बेशक दिखाई देते हैं, परन्तु देवरूप की प्रकृत झलक दिखाई नहीं देती। फिर प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या मुझे देव ज्योति कभी भी नहीं मिली थी? देवात्मा के देव प्रभाव साधनों व सभाओं से मिलते तो थे, वह मेरी रक्षा वा भला भी करते थे व मेरी कुछ सात्विक पूंजी को जाग्रत करने का काम भी करते थे, उससे मेरा भला अवश्य होता था, जिसके कारण मैं आज तक मिशन में कुछ चलता फिरता रहा हूँ। परन्तु देव ज्योति की आवश्यक मात्रा मुझे नसीब नहीं हुई थी, जिससे कि मुझे देवरूप की प्रकृत झलक नज़र आ सकती। उस मात्रा में देव ज्योति इतने लम्बे समय तक क्यों नही प्राप्त हुई? इसका बड़ा और ठोस कारण था मेरी अपने अहं - अनुराग के प्रति घोर अन्धता और बेसुधी और अहं का हृदय पर ज़ोरदार अधिकार। जैसे घोर काली घटाओं में सूर्य चढ़ा होकर भी दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार मेरे हृदय के ऊपर घमंड, नीच घृणा और स्वार्थ की मोटी - मोटी परतों के कारण मुझे देव ज्योति नहीं मिलती थी और न ही देवरूप दिखाई देता था।

मेरे महा सौभाग्य कि कोई 31 - 32 वर्ष पहले मुझे सहायकारी शक्तियों की कृपा से अपने साधन में ऐसे प्रभाव मिले जिन्होंने मुझे अपने नीच जीवन सम्बन्धी चिन्तन और लिखने के साधनों में लगा दिया। उससे धीरे - धीरे मेरे ऊपर यह महा उपकार होने लगा कि मुझे अपने अहं की भयानकता के दर्शन होने लगे तो उससे बचने का संग्राम होने लगा। इस संग्राम के कुछ वर्ष जारी रहने से (जो टूटा फूटा अब भी जारी है) मुझे गुरू महाराज की कुछ - कुछ ज्योति मिलने लगी जिससे मेरे ऊपर किसी अंश देवात्मा के देवरूप के अति सुन्दर सूर्य रूप की झलक दिखाई देने लग पड़ी, जोकि मेरी आंखों से अब तक ओझल ही रही थी।

किसी अंशमात्र देवरूप के दर्शनों से, मेरा प्रकृत नीच रूप भी दिखाई देने लगा और उसके कम होने (मोक्ष) के नियम भी पूरे होने लगे। जिस मात्रा में मेरा यह नीच जीवन घटा है या घटता है, उसी मात्रा में मेरे ऊपर देवरूप का महा सुन्दर सूरज चमका है। मैं विस्मित हूँ, हैरान हूँ और धन्य - धन्य हूँ कि मेरे जैसे तुच्छ ओर नीच

को कुछ - कुछ देवरूप का लश्कारा दिखाई देता है। मैं इस सौभाग्य को शब्दों में ब्यान नही कर सकता। गुरू चरणों में सजदा ही कर सकता हूं, बस।

अब देव रूप में मुझे मेरी तुच्छ व अदना हस्ती के मोक्ष और विकास का नियम नज़र आता है, जैसे हवा, पानी, खुराक, रोशनी, मेरी जिन्दगी के नियम हैं अथवा जीवन दान देने वाले हैं उतना ही आवश्यक क्या मेरे लिए और क्या किसी और हस्ती के लिए, देवरूप जीवन दायक है। जैसे हवा, पानी के बिना किसी का गुज़ारा नहीं, कोई जिन्दा नहीं रह सकता, उसी प्रकार देवरूप के सम्बन्ध के बिना कोई सुरक्षित नहीं रह सकता, रक्षा प्राप्त नही कर सकता, अध्यात्मिक जगत में पनप नहीं सकता। देवरूप के बिना न मेरा और न किसी और का निर्वाह हो सकता है। देवरूप की तासीरों के बिना मेरा विनाश निश्चय है, हानि निश्चय है, दुख और बर्बादी निश्चय है। हवा की तरह देवरूप मनुष्य के लिए आवश्यक अंग है। इस देवरूप की निकटता जैसा कोई सौभाग्य नहीं, इस देवरूप से उदासीनता या दूरी जैसी कोई बदकिस्मती नहीं। देवरूप मनुष्य के प्राण ही हैं। इसके बिना लोहार की मुर्दा मशक की तरह ही हमारे सांस चलते हैं। वह प्रत्येक जन जो देवरूप का नाम लेने वाला है, (जो कि मिथ्या का और पापों का त्यागी व देवात्मा का विश्वासी है) मुझे प्यारा लगता है, अपना लगता है। वह चाहे मुझे अच्छा समझे या मुझसे बुरा व्यवहार करे, चाहे निकटी हो या विरोधी। यह सब तो हमारे अपने - अपने भावों की लीला है। परन्तु वह मेरा अपना है, खास अपना, कोई गैर नहीं। उसमें देवरूप की कुछ लौ, कुछ महक अवश्य समाई होती है। उनका प्यार मुझे देवरूप के निकट करता है। उनके प्यार व सत्कार के बिना मैं उन्हें शोभित करने वाले स्रोत को कैसे प्यार कर सकता हूँ? उनका दोषी होकर तो मैं देवात्मा का दोषी बने बिना नहीं रह सकता। फिर जीवन के मुख्य नियम का ही घातक बन जाता हूं।

देवरूप मेरे लिए सब सम्भव हितों की वर्षा करता है इसलिए मेरे सारे हित और सच्चे सुख देवरूप के साथ जुड़े हैं। देवरूप उक्त सबका अनन्त: स्रोत है

जैसे सूरज की तुलना किसी चिराग, तारे या चाँद के साथ नहीं की जा सकती, उसी प्रकार देवरूप की तुलना किसी भी सुन्दर से सुन्दर, महान से महान हस्ती के साथ नहीं की जा सकती। देवात्मा हमारी रूह की जान और प्राण हैं।

देवरूप वह मानवता का सच्चा हित करता है, जो न पहले किसी ने किया था और न करना सम्भव था, न अब कोई कर रहा है और न कर सकता है।

अब समझ आती है कि गुरू महाराज यह दावा कैसे कर सकते थे कि सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी को या भाई मोहन देव जी को हम से कोई नहीं छीन सकता? क्योंकि उनके अहं चूर हो चुके थे, उनको देवात्मा का देवरूप उनकी ही ज्योति में चमकता था। उस चमक को देखने वाले किसी भी कीमत पर उन रोशनी के मिनार देवत्व के सूरज से कैसे दूर हो सकते थे।

गुरू महाराज अपने कर्मचारियों को फरमाया करते थे कि तुम्हें देवात्मा के द्वारा प्राप्त

महासौभाग्य को याद करके खुशियों से भरकर नाचने की आवश्यकता है। अब इस फरमान की भी समझ आने लगी है।

देवरूप की महानता किसी प्रकार भी वर्णन नहीं हो सकती। "आपकी महिमा है लासानी, मुश्किल है वह कहके सुनानी" मैं तो इसी बात से ही धन्य धन्य हूँ कि मेरे जैसे तुच्छ, नीच, मन्द बुद्धि, ग्रामीण तथा असभ्य जैसे वजूद को किसी अंश देवरूप की आकर्षणीय झलक के दर्शन करने नसीब हो गए।

मैं अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं देखता कि मेरे भीतर देवरूप के दर्शनार्थ कुछ न कुछ आंखें पैदा हो सकीं। मैं अपने माता पिता और अन्य पूर्वजों को धन्यवाद देता नहीं थकता कि जिनके सच्चे तपों वा त्यागों से मुझे विरासत में ऐसी पूंजी मिली, जिसके कारण गुरू महाराज के घोर तपों, त्यागों और जान न्यौछावर करके उनमें जो ज्योति विकसित हुई वह महा विलक्षण ज्योति की किरण प्राप्त करने और उस नियम को पूरा करने व सहायकारियों की दुर्लभ सहायता से उस ज्योति को प्राप्त करने का अधिकारी बन सका।

यदि मुझे अपना भयानक अहं ही दिखाई न देता, जैसे बड़ी उम्र तक दिखाई नहीं दिया और वह पहाड़ की तरह अटल रहता और मैं अटल अहं अनुरागी सारी उम्र अन्धा और पागल रहकर दूसरों को बुरा वा खराब कह कह कर अपना मुंह - माथा तुड़वाकर, घुल - घुल कर नष्ट हो जाता। बाहर की आंखे देने की तरह, उक्त प्रकृति की पूंजी के जो दाता हैं, जिनकी कृपा से मेरे भीतर देवात्मा के देवरूप को देखने की आंख पैदा हुई है, उनका व अन्य सहाकारियों का, जिन्होंने मुझे धक्के खाते हुए को, मिथ्याओं में फंसे हुए को बचाने की कृपा की है, उनकी कृपाओं की बारिश का मैं महा अबोधी और बेसुध किस प्रकार धन्यवाद दे सकता हूँ। ऐ मेरे उपकारियों, ऐ मेरे हितकारियों आप धन्य हो, जिनके तपों - त्यागों ने मुझे महा सौभाग्यवान बना दिया है। मेरे हृदय की आंखों के सामने देवरूप की अलौकिक छवि प्रकाशित कर रहे हो। जहां देव ज्योति के सूर्य असंख्य बार धन्य - धन्य कहे जाने के अधिकारी हैं, वहां मेरे भीतर देवरूप को देखने वाली आवश्यक हृदय की आंख देने वाले दाता भी धन्य - धन्य हैं।

- श्रीमान बलदेव सिंह जी

सच्चे और झूठे धर्म साधन

18 अगस्त की प्रातः काल सत्संग की सभा में श्री देवगुरु भगवान् ने यह तत्व प्रगट किया, कि जहां साधारण जन केवल किसी गीत के गान, किसी स्तोत्र वा पुस्तक के पाठ अथवा किसी मन्त्र के जाप को ही धर्म का साधन समझते हैं और ऐसा करके संतुष्ट रहते हैं, वहां तुम्हें इस प्रकार के साधन से तृप्ति नहीं पानी चाहिए। तुम जब कोई साधन करो, तो अपने भीतर विचार पूर्वक इस प्रकार प्रश्न करो कि :-

(1) मैं यह साधन किसके संबंध में करता हूं?

(2) किस उद्देश्य के सिद्ध करने के लिए करता हूँ?

(3) जिस उद्देश्य के सिद्ध करने के लिए करता हूं, क्या उससे वह उद्देश्य सिद्ध हो सकता है?

(4) इस साधन से वह उद्देश्य अब तक कहां तक सिद्ध हुआ है?

इन प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर पाने के बिना तृप्त नहीं होना चाहिए। फिर इस विषय में उन्होंने मनुष्य सृष्टि के बड़े बड़े जनों और नाना सम्प्रदायों के नेताओं की तुलना में अपनी यह विशेषता प्रगट की, कि जहां वह धर्म के नाम से अनेक प्रकार की क्रियाएं करके कभी भी यह प्रश्न तक नहीं करते, कि वह जो साधन, भजन आदि करते हैं वह किस उद्देश्य के पूरा करने के लिए करते हैं और उससे वह उद्देश्य कहां तक पूरा होता है, वहां उसके विरूद्ध हम सदा हकीकत को देखते आए हैं, और जहां किसी साधन से वास्तव में कोई लाभ होता नहीं देखते, वहीं उस साधन को वह चाहे किसी नाम से हो छोड़ देते रहे हैं । दृष्टान्त के तौर पर बाबा नानक ने एक जगह लिखा है "सुणिया दुख पाप का नाश" अर्थात् (ईश्वर का नाम) सुनने से ही दुख और पाप का नाश हो जाता है। अब हज़ारों जन इस का प्रतिदिन पाठ करते हैं, परन्तु उसे प्रतिदिन पाठ करके उनमें से कोई कभी यह प्रश्न तक नहीं करता है, कि क्या ईश्वर का नाम जपने वा सुनने से पापों का नाश होता है? और जो लोग ईश्वर का नाम सुनते वा सुनाते हैं, वह पापी नहीं हैं? कोई इस सत्य की ओर ध्यान नहीं देता, कि जब इसके पाठ व श्रवण से हमारे पाप दूर नहीं होते, तो हम इसे क्यों बराबर पाठ करते रहें। हमने इस महा सत्य को देखा है और इसलिए जिस साधन व विश्वास से कोई लाभ नहीं देखते, उसे जारी रखना नहीं चाहते। तुम सब भी इस सत्य को उपलब्ध करो, और केवल गाने के लिए कोई भजन वा गीत न गाओं, केवल पाठ करने के लिए किसी पुस्तक वा स्तोत्र आदि का पाठ न करो, केवल जप के लिए कोई मन्त्र न जपो, किन्तु जब साधन के लिए बैठो तो पहले विचारपूर्वक यह परीक्षा करो, कि मैं इस समय किसके संबंध में साधन करता हूँ? और किस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए करता हूँ? मेरा साधन ठीक होता है या नहीं? यदि ठीक होता है, तो उससे मेरा उद्देश्य सम्बन्धी फल पैदा होता है या नहीं? इस प्रकार यदि तुम सत्य भाव के साथ अपने साधन करो, तो थोड़े काल में ही अपने जीवन में बहुत बड़ा शुभ परिवर्तन देख सकते हो और यदि साधन करते समय उपरोक्त सत्यों की ओर ध्यान न दो, तो चाहे जितने काल तक साधन करते रहो, तुम्हारा सारा परिश्रम निष्फल जाएगा। इस अति मूल्यवान् और जीवनदायक उपदेश से मेरे भीतर साधन करने के सबंध में एक नई दृष्टि उत्पन्न हो गई और मैंने देखा, कि इस ज्योति के बिना मैं अनेक बार ऐसे साधन करता हूँ, कि जो कोई उच्च फल उत्पन्न नहीं करते रहे, मैंने आगामी काल में इस महा हितकर तत्व को सम्मुख रखकर साधन करने की प्रतिज्ञा की ओर ऐसे महोच्च दान के दाता के श्री चरणों में सिर झुकाकर उनका आशीर्वाद लाभ किया।

आपकी ज्योति में नज़र आवे हकीकत रूह की

(1) एक सेवक अपने साधन में इस प्रकार लिखते हैं :-

"मैं सुखों का अनुरागी हूँ और सुख चाहता हूँ और जब मेरा सुख पूरा नहीं होता तब मैं नीच घृणा की भावना रखता हूं। मेरी पत्नी महोत्सव पर नहीं गई तब मुझ में पत्नी के प्रति नीच घृणा की भावना पैदा हो गई। मैं अपने आप नीच भावों पर काबू नहीं पा सका। कुछ दिन तक मैंने उनसे सही रूप से बात नहीं की। अपनी नीच घृणा द्वारा जलता रहा हूं और जब मेरी पत्नी मुझे प्यार से बुलाती, मैं उससे न बोलता। मुझे नीच घृणा भाव समझ नहीं आने दे रहा था कि मैं अपनी पत्नी का कुछ लगता हूं। मैं अपने इस नीच भाव के कारण अन्दर से सड़ता कुड़ता रहा और अपनी हानि करता रहा।

जब (देव ज्योति में) होश आई तो पता चला कि मैं बेवकूफ अपनी हानि कर रहा हूं। गुरू महराज की छवि के आगे सिर रख कर अपने आपको जानने की होश आई कि वह तेरी उपकारी है। वह तेरे लिए अपना घर छोड़ कर आई है। और तूं उसका निरादर कर रहा है। तेरे को वह सुबह शाम खाना खिलाती है। तेरी वह सेवा करती है। उसने तेरे घर का सारा बीड़ा उठा रखा है। तेरी हिम्मत कैसे हुई कि उसको घृणा करो।

देवात्मा के देव प्रभाव जब मिले तब पत्नी के गुण नज़र आने लगे। वह सारा घर साफ सुथरा रखती है। और खुद भी साफ़ और खुश रहती है और अच्छे भावों से बच्चों को पालती है। जब मेरे माता पिता बीमार हुए थे तब उनकी सेवा में पूरा साथ दिया था।

(2) एक अन्य सेवक अपने साधन में इस प्रकार देखते हैं :-

"भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि जिसने परिशोध नहीं किया, उसने मेरे जीवन को नहीं पहचाना, मेरी शिक्षा को नहीं पहचाना।

मुझ नीच की एक घटना मुझे बार बार सता रही थी कि लगभग 42-43 वर्ष पहले मैंने काम वासना के वशीभूत होकर एक छोटी सी बच्ची के प्रति अश्लील हरकत करने की कोशिश की थी। जो घटना बार बार याद तो आ रही थी लेकिन इतना दुख नहीं दे रही थी, जितना उपरोक्त देव वाणी को पढ़ कर दुख हुआ। भगवन आपकी ज्योति ने मुझे दिखा दिया कि यह तो जहर (विष) है। यह आत्मा की मौत है। इसको त्यागना चाहिए। इस जहर को उगलना चाहिए। इस काली भूतनी शक्ल को लोगों पर जाहिर कर देना चाहिए। लोग मुझे बहुत अच्छा और ज्ञानवान समझते हैं। लेकिन हूं तो मैं इसके पूर्णत: विपरीत। मैं लोगों को अन्धेरे में रख रहा हूँ। दूसरों को अन्धेरे में रखने वाला खुद उजाले में कैसे रह सकता है? यह तो कपटता है। कपटता महा पाप है। मैं इस पाप को रख कर महा पापी बन रहा हूं। कपटी रह कर मैं आत्मा की खुराक (देव प्रभाव) कैसे पा सकता हूँ? मैं भगवान की ज्योति पाकर देव प्रभावों से वंचित नहीं रह सकता। कपटी नहीं बन सकता। मुझे अवश्य बचना चाहिए। बचने का असली तरीका यही है कि देव प्रभाव अधिक से अधिक पाऊं

और अपनी असली शक्ल पेश करूं।

भगवान आपकी ज्योति को पाकर जीवन का पथ दिखता है। जीवन मृत्यु से बचता है।

भगवान की ज्योति का मुहताज उनका एक तुच्छ सेवक।

(3) एक अन्य सेवक अपने साधन में इस प्रकार देखते हैं :-

मृत्यु हर्ता और जीवन दाता भगवान!

आपकी छवि के आगे सिर रखकर प्रणाम करता हूं। आपकी ज्योति और तेज के बिना मेरी हालत बहुत कृपापात्र और तरस के लायक है। मेरी नीच शक्तियां बहुत बलवान हैं मैं उनसे बचना चाहता हूँ परन्तु इतना लाचार हूं कि चाहकर भी उनसे नहीं बच सकता, क्योंकि उनसे बचाने वाली आपकी शक्ति को पाने का मेरा कोई संग्राम नहीं है। वो नीच शक्तियां मेरे को घसीट कर पतन की ओर ले जाती हैं। मैं अपने आप से वायदा करता हूं, कि मैं अब उन शक्तियों के अधिकार से मुक्त हो जाऊंगा पर शायद वो वायदा मैं तोड़ देने के लिए करता हूं।

हे देव! आप महा दान के दाता हैं। आपने अपनी शक्ति को दान देकर बहुत से पापी जनों को बचाया है। आप मेरे को भी बचाओ। मेरी चिन्ता, मेरी इच्छा, मेरा सुख, मेरी खुशी, मेरी क्रिया मेरे आत्मा की नाशक हैं। सालों से नीच गतियां जारी हैं। मौत का कार्य जारी है। मेरे दाता मौत का कार्य बंद हो, आपकी ज्योति और तेज का कार्य मेरे आत्मा पर हो। मेरी रक्षा और विकास का मार्ग खुले।

- अति नीच और बचने का इच्छुक सेवक

मैं अपने धर्म साधनों के लिए अपने हृदय को किस प्रकार तैयार करूँ?

जैसे रोटी पकाने से पहले तवे का गरम होना ज़रूरी है, वैसे ही पहले साधन में साधक के लिए भगवान देवात्मा की ज्योति और शक्ति के लाभ करने के निमित्त हृदय का तैयार करना भी ज़रूरी है। यह हृदय की तैयारी क्योंकर की जाती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो बातें जाननी आवश्यक है, वह यह हैं :-

पूजनीय भगवान की छवि के सम्मुख अथवा किसी ऐसे स्थान में जहां उनके चरण पड़े हों, अथवा किसी ऐसी वस्तु पर जिस का उनके श्री चरणों से स्पर्श हुआ हो, वहाँ अपने सिर को रखकर प्रणाम के द्वारा दीन भाव उत्पन्न करना चाहिए, अर्थात् इस प्रकार सिर रखे हुए अपने भीतर बार बार यह प्रार्थना करनी चाहिए, कि "हे जीवन ज्योति के भण्डार! मैं ज्योति विहीन हूँ, तुम ज्योति दाता हो। मुझे तुम्हारी ज्योति की आवश्यकता है। मैं तुम्हारी ज्योति का मुहताज हूँ, मुझे तुम्हारी ज्योति प्राप्त हो। हे देव शक्तियों के भण्डार! मुझ तक तुम्हारी शक्ति पहुंचे। उससे मेरी आत्मिक हित आकांक्षा जाग्रत और उन्नत हो। मैं अपना हित चाहूं, और तुम्हें पूर्ण हितकर्ता रूप में उपलब्ध करूं, जिस से मेरे हृदय का आकर्षण तुम्हारी ओर हो, और मेरे अन्य वासना मूलक आकर्षण मेरे हृदय को तुम से परे अथवा

विमुख न करें।" इस प्रकार उतनी देर तक लगातार चिन्तन करते रहना चाहिए, जब तक चित्त स्थिर न हो जाए, और हृदय नम्र और सरस होकर देव ज्योति और तेज का आकांक्षी न बन जाए। जब इस प्रकार हृदय की अवस्था हो जाए, कि एक ओर वह अपने आप को जीवन दायक ज्योति और तेज का मुहताज अनुभव करे दीन, दरिद्र, कंगाल वा भिखारी का रूप ग्रहण करे, और दूसरी ओर स्थिर होकर जीवन दायिनी देव ज्योति और तेज का सच्चा आकांक्षी बने, तब वह किसी सात्विक धर्म भाव यथा विश्वास, श्रद्धा, प्रेम, कृतज्ञता, सेवा, भेंट आदि के उत्पन्न करने के निमित जिस जिस स्तोत्र, पाठ, विचार, संगीत, प्रार्थना आदि के करने की आवश्यकता है, उसके ठीक तौर से करने की योग्यता लाभ करता है, और अपने साधन को फलदायक बना सकता है। और जैसे तवा चूल्हे पर रहकर जब काफी गरम हो जाता है, तब वह रोटी को भली भांत सेंक पहुंचाकर पका देने की योग्यता लाभ करता है, वैसे ही ऐसा हृदय उन सब साधनों के पूरा करने की योग्यता लाभ करता है कि जिनके पूरा होने से साधन सफल होता है।

मैं अपने धर्म साधनों की सफलता वा निष्फलता को क्योंकर जान सकता हूं?

साधन के समय जब तक यह लक्षण उत्पन्न न हों, तब तक उसे सफल न समझना चाहिए। यथा :-

(1) पाठ और विचार के समय आत्मा के भीतर ज्योति प्रवेश करे, और साधक की अवस्था के अनुसार उसके भीतर उसके कल्याण के लिए जिस जिस सत्य का प्रकाशित होना आवश्यक है, वह भली भान्ति प्रकाशित हो, और वह इस ज्योति में सबसे पहले अपने ज्योति दाता के सम्बन्ध में अपने किसी अपराध व पाप व अपनी किसी उदासीनता व नीचता को देख सके।

(2) अपने किसी अपराध व पाप व उदासीनता व नीचता के लिए सचमुच घृणा और दुख अनुभव करे।

(3) उनकी किसी महानता को उपलब्ध करके उनके प्रति श्रद्धा की लहर को अपने हृदय में उत्पन्न होता अनुभव करे, और उसका अपूर्व रस लाभ करे। और लोगों के सम्मुख उनकी महिमा के गाने के लिए सच्ची आकांक्षा और उसके गाने में परम सुख अनुभव करे।

(4) उनके शिव वा हित रूप को उपलब्ध करके उनके प्रति अपने भीतर प्रेम की धार निकलती हुई अनुभव करे, और उसके पवित्र उच्छवास् से गदगद और उच्च आनन्द से मस्त हो जाए। उसका हृदय उछलने लगे और अपने जीवन दाता के चरणों से जा लिपटे और उसके हितकर नशे से भर जाए।

(5) उनके सम्बन्ध में जो जो पाप व अपराध व उदासीनता आदि दिखाई दे, उसे और उसके विकार को दूर करके उनके साथ अपने सम्बन्ध को मेल की अवस्था में लाने की सच्ची आकांक्षा उत्पन्न हो।

(6) उनकी प्रसन्नता और निकटता लाभ करने के लिए जिस जिस प्रकार की भेंट व सेवा करनी आवश्यक है, उसके पूरा करने की सच्ची आकांक्षा उत्पन्न हो।

(7) उनसे जो जो बात छिपाकर रखता हो, उससे घृणा पैदा हो और उनके आगे सरल रूप से सब कुछ बता देने की आकांक्षा उत्पन्न हो।

(8) उनसे उच्च जीवन विषयक महा अमूल्य देव प्रभावों को पाकर उन्हीं को अपना सर्वस्व और सर्वोच्च सम्बन्धी अनुभव करता हो, और उनके लिए सब प्रकार से सेवाकारी और आज्ञाकारी बनने में ही अपना पूर्ण हित देखता हो।

यह थोड़े से मोटे मोटे लक्षण हैं, कि जिनके द्वारा हर एक साधक अपने साधनों की सफलता वा निष्फलता की परीक्षा कर सकता है।

कल्याण में माता पिता सन्तान व्रत

कल्याण (भठिण्डा) में माता-पिता सन्तान व्रत के उपलक्ष्य में 3 फरवरी से 5 फरवरी तक सत्संग रखा गया। जिसमें करीब 30 जन बाहर के स्थानों से पधारे। विशेष तौर पर चण्डीगढ़ से सम्मान के योग्य प्रिंसिपल श्रीमति सतिन्द्र ढिल्लों जी खराब सेहत के बावजूद दिली भावों से शामिल हुई और इसके अलावा भी दूर के स्थानों से 6 स्त्रियाँ और 25 के करीब पुरूष इसमें अलग- अलग स्थानों से हर्ष पूर्वक पहुँचे। पूर्व निर्धारित सभाओं के अलावा श्रीमति सतिन्द्र जी व श्रीमति देवेन्द्र कौर जी ने मिलकर एक सभा की जिम्मेवारी को पूर्ण किया जिनमें पारिवारिक मसलों व मिथ्याओं पर विशेष चर्चा की गई।

इस प्रोग्राम के सारे इन्तजाम को सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने अपने नेतृत्व में संभाला जिसमें श्रीमान बूटा सिंह जी व उनके सहयोगियों ने अच्छा सहयोग दिया।

काफी खराब मौसम के बावजूद बड़ी उम्र के धर्म सम्बन्धी अच्छी संख्या में पधारे। गुरू की कृपा वा सहायकारियों की सहायता से एक-एक सभा में बहुत ही प्रभावदायक मण्डल बनता रहा और अधिकारी आत्माओं ने अपनी योग्यता के अनुसार बहुत लाभ उठाया।

प्रवेश सभा : 3 फरवरी, 2024,
शाम : 6.30 बजे
विषय : धर्म की परिभाषा और उसकी सार्वभौमिकता
सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

गुरू महाराज की सुन्दर छवि का अर्चन कर 2 भजनों का गान किया गया।

इसके उपरान्त सभापति जी ने ब्यान फरमाया कि धर्म क्या है, कौन से व्यवहार धर्म मूलक होते है और किन व्यवहारों से मनुष्य धर्म से दूर होकर अधर्मी अथवा पापी बन जाता है। नेचर के अटल नियमों की तरह धर्म के भी नियम हैं जो कि अटल हैं व सबके लिए समान है। इसके बाद उन्होंने धर्म मूलक व्यवहारों का घटनाओं द्वारा विशलेषण किया।

4 फरवरी 2024, सुबह : 9.30 बजे
सभापति : प्रिंसिपल श्रीमान सरताज सिंह जी।

विषय : सम्बन्धों में धर्म मूलक व्यवहार।

सभापति जी ने ब्यान किया कि पूजनीय भगवान देवात्मा की वाणी है कि "मैं इसी पृथ्वी पर स्वर्ग लाना चाहता हूँ...." गुरू महाराज ने सम्बन्धों में स्वर्ग पैदा किया है इसी हितकर कार्य के लिए उन्होंने देवशास्त्र खण्ड 4 की रचना करके हमें अलग अलग सम्बन्धों में अनमोल शिक्षा दी है। सभापति जी ने और कई घटनाओं के ब्यान के साथ-साथ अपने पूज्य पिता जी की पवित्रता व अपने पूज्य दादा जी की ईमानदारी की घटना का श्रद्धा एवं सन्मान भरे भावों से वर्णन किया। सभा का माहौल उच्च प्रेरणाएँ प्रदान करने वाला था।

दोपहर : 3.00 बजे

सभापति : (1) श्रीमति दविन्द्र कौर जी,
(2) श्रीमति सतिन्द्र ढिल्लों जी

भजन के गान के बाद पहले मैडम दविन्द्र जी ने माता-पिता व सन्तान के आपसी सम्बन्धों में कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसका वर्णन किया। उन्होंने स्वयं की तरफ से हुई अपने पिता जी सम्बन्ध में गलती को काफी दुखी हृदय के साथ ब्यान किया।

बाद में डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों जी ने बहुत दिली भावों से अपने माताजी और पिता जी की मेहनतकश जिन्दगी, उनके त्याग और तपस्या और उनके द्वारा स्वयं के ऊपर हुई मेहरबानियों का ब्यान किया। स्त्रियों में फैली हुई मिथ्याओं के प्रति विस्तारपूर्वक वर्णन किया। पारिवारिक उदाहरण देकर मिथ्या विश्वासों एवं संस्कारों को समझाने का उनका संग्राम हितकर था।

शाम : 6.30 बजे।

सभापति : श्रीमान गौतम जी।

विषय : विशेष प्रभावों द्वारा उच्च परिवर्तन

भजनों के गान के बाद पहले उन्होंने विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी व श्रीमति सुरजीत बराड़ जी द्वारा भेजे गए शुभकामना व आशीर्वाद स्वरूप सन्देश को पढ़कर सुनाया।

उसके बाद उन्होंने अपने ब्यान में इसी गाँव "कल्याण" की उपमा को बताया कि यहाँ मनुष्यों में श्रेष्ठ हस्ती श्रद्धेया जी व परम महान आविर्भाव देवात्मा ने अपने चरण डाले हैं। यहाँ श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अपने तप के द्वारा डाकुओं के सरदार को बदला है। अन्य खूँखार, अन्यायकारी, पशुवध करने वाले व लड़कीमार दानवों जैसों को बदला है। इसके बाद उन्होंने कई उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि ऐसे निराले सतगुरू की शिक्षा व प्रभावों को पाकर नाशुक्रे व कृतघ्न बच्चे शुक्रगुज़ार व सेवाकारी बने हैं। आपजी का ब्यान बहुत दीनता पूर्वक व प्रेरणादायी था।

इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने हाजरीन को सम्बोधित करके इस प्रोग्राम से प्रेरणा हासिल करने को व अपने अन्दर कुछ प्रण करने के लिए हितकर सुझाव दिए। यह सभा भी अच्छी प्रभावशाली व करीब 2 घण्टे तक चली।

5 फरवरी 2024,

समय : 9.30 बजे

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय : श्रद्धा भाजन माता और पिता।

सभापति जी ने पहले नेचर तत्व को समझाया, उसके अन्दर किस प्रकार हर क्षण

परिवर्तन जारी है। जो हितकर परिवर्तन की ओर जाते हैं, वह विकासकारी परिवर्तन की ओर जाते हैं, व जो खराब व अहितकर परिवर्तन की ओर जाते हैं वह विनाशकारी परिवर्तन हासिल करते हैं। इसके बाद उन्होंने श्रद्धाभाजन कौन होते है, विशुद्ध परोपकारी कौन होते हैं, माता - पिता अपने बच्चों के लिए किस प्रकार विशुद्ध उपकारी व इसलिए श्रद्धाभाजन हैं इसको समझाया।

सभापति जी ने अपने बारे में बताया कि कैसे उनके अन्दर जब उच्च प्रभावों से माता - पिता के प्रति जब श्रद्धा सम्मान पैदा हुआ तो वे अपने से बड़े चाचा - ताया से (माता - पिता के) खिलाफ एक दो लफज भी सुनना बर्दाश्त नहीं कर सके और उन्हें आगे के लिए ऐसी गुस्ताख़ी कभी न करने की चेतावनी दे दी जबकि वे खुद पहले माँ की कद्र न करने वाले व उन्हें सताने वाले वजूद थे। उन्होंने और कई जनों की श्रद्धा, सन्मान व सेवा की घटनाओं का वर्णन किया।

सभा के मध्य में प्रेरित होकर श्रीमान गुरदेव राज जी ने "माँ प्यारी माँ" भजन का खड़े होकर भाव विभोर अवस्था में गान किया।

इसके बाद सभापति जी ने इस व्रत से सम्बंधित हितकर रीत को निभाने के लिए अपील की जिसके बाद हाजरीन में से बच्चों ने अपने माता - पिता, सास - ससुर व अन्य बड़ों को फूलों के हार डाले और उनके आगे प्रणाम करके सन्मान प्रदर्शन किया।

इसके बाद कई जनों ने उपरोक्त साधन के द्वारा प्रेरणा लाभ करके गहरे भावों से अपने माता - पिता व अन्य सम्बन्धियों के द्वारा पाए हुए हितों का ब्यान किया। सभी हाजरीन ही जैसे कि गुरू अमृत रस का पान करके धन्य - धन्य अनुभव कर रहे थे।

सभा के बाद सब धर्म सम्बन्धियों ने भोजन किया, सभी को खीर का सेवन कराया गया। अन्त में सब ने पवित्र खुशियों के साथ भावभीनी विदाई ली। दान के रूप में 10,000 रूपये प्राप्त हुए।

भाव प्रकाश

1) **श्रीमान दूनीचन्द जी -** मुझे मेरे पिताजी के बहुत उपकार नज़र आ रहे हैं। पिताजी ने जमीन मेरे नाम भी करवा दी थी परन्तु भाई ने जब उनके विरूद्ध मुझे कहा कि उन्होंने तेरे नाम जमीन नहीं करवाई तो मैंने गुस्से में उन पर वार करने के लिए पत्थर उठा लिया था, परन्तु बचाव हो गया। मेरे पिताजी ने मेरी टाँग की हड्डी टूटने पर उसे ऐसी जोड़ी कि टूटने का पता भी नहीं लगता जिससे मैं आज तक चल रहा हूँ। एक बार मेरा एक मशीन के द्वारा हाथ का अँगूठा कट कर नीचे गिर गया था उसे भी उन्होंने जोड़ दिया। उनमें बहुत गुण थे वे हड्डी उतरने अथवा टूटने पर उसका ईलाज व अन्य कई प्रकार की बिमारियों के ईलाज बेहतरीन तरीके से व मुफ्त में दवाईयाँ देकर करते थे। वह पशुओं के भी ईलाज में बहुत योगदान देते थे। हम उनकी कद्र नहीं कर सके, इसका बहुत दुख है।

2) **श्रीमान गुरदेव राज जी :-** हमारे

श्रद्धेय माता पिता जी जो बातें हमें बताते थे हम उनकी बातों की कद्र नहीं करते थे। 1949 में वो खाली हाथ पाकिस्तान से आए थे। बहुत कम जमीन अलाट हुई थी। मेरे श्रद्धेय पिता जी और श्रद्धेय माता जी और श्रद्धेय ताई जी ने बहुत मेहनत की। खेती की। उन्होंने जो मेहनत की वो हमारे लिए की। मेहनत करके उन्होंने दो से बारह एकड़ का हमें मालिक बना दिया। मैंने एक बार पिता जी को कह दिया तुसीं साढ़े लई की कीता है। (रो-रो कर) गुरू महाराज जो हमारा भला करते हैं, उसको हम नहीं जान पाते। 2000-2024 तक पिता जी को गुरू महाराज की कृपा से प्रणाम करता था। श्रीमान जी का लेख 'माँ की छाया' पढ़कर अपनी माता जी की सेवा करने लगा हूँ। मेरे पिता जी में ईमानदारी बहुत थी। उन्होंने उनकी ईमानदारी की घटना बताई।

3) **श्रीमान जलधर जी चण्डीगढ़ :-** यहां आकर अपने पिता जी का परोपकारी रूप दिखा है। मेरे पिता जी मरीज़ों को हस्पताल पहुंचाते थे। और मृतकों का संस्कार भी करवाते थे। मैं आगे से ऐसे परोपकार के काम करूंगा। मैं माता जी की दवाई और कपड़ों के लिए सेवा करूंगा। मैं माता जी की सेवा करने वाले भाई को अपनी ज़मीन दूंगा।

4) **श्रीमान बलदेव सिंह जी ढाणी :-** 1947 में माता जी भारत आ गए। इधर बंजर जमीन अलाट हो गई माता जी सदमें से भर गई। हमारे पिताजी ने हमारी पालना के लिए दूसरी शादी नहीं की। हमारे पिता जी हमें strong बनाकर गए हैं।

5) **श्रीमान बूटा सिंह जी :-** मेरी आंखे खराब हो गई। माता जी मुझे इलाज के लिए लेकर जाती रहीं। सभा में जाने के लिए माता जी ने पैसे दिए। मैं आज तक अपनी माता जी के कहने पर सभाओं में जाता रहा हूँ।

6) **श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :-** हमारे खेत में एक वृक्ष था। हमारे बुजुर्ग चाहते थे कि वह वृक्ष न बेचा जाए। पर मैंने वो वृक्ष बेच दिया। यह मेरी गुस्ताखी थी।

7) **श्रीमती भजन कौर जी :-** मुझे अपने पिताजी के गुण नज़र आते हैं। मेरी माता जी परलोक चली गई थी, पिता जी मेरी बहुत सेवा करते रहे।

8) **श्रीमती दविन्द्र कौर जी :-** मेरे पिता जी बहुत ईमानदार व्यक्ति थे। मेहनत करके उन्होंने जमीन बनाकर दी। एक बार मैंने अपने पिता जी को नशे की गोलियां दे दीं, ऐसा पाप भी हमसे हुआ है। नशे की वजह से उनकी जान ही चली जानी थी। फिर माता जी ने उनकी सेवा करके उनकी जान बचाई।

9) **श्रीमान सुन्दर लाल जी :-** सभा में बैठकर माता के उपकार नज़र आ रहे थे। अपनी माता के प्रति गलतियां नज़र आ रही थीं। मेरी शादी और बहन जी की शादी पर माता जी ने कहा कि बहन को एक बर्तन की ज़रूरत है। मैंने कहा बर्तन की कोई ज़रूरत नहीं है। मैंने उन्हें सख़्त लफज़ों में उन्हें डांट दिया। अब यहां आकर नज़र आया है। मेरे पिता जी बहुत ईमानदार थे। 1947 में जब भारत आए तो एक जमीन हम बोते थे। हमने ज़मीन छोड़ दी, बेईमान नहीं हुए। ज़मीन पर कब्जा नहीं किया। मेरे माता पिता जी तो परलोक चले गए हैं। अब उनके अंश यानि

अपने भाई बहनों की सेवा करूंगा। मैं अपने भाई बहनों का अपमान नहीं करूंगा।

10) **श्रीमान जागीर सिंह जी (लिखकर)**

मैं जो पहले भूला हुआ था, वह इन सभाओं में कुछ नज़र आया है। मैंने माता - पिता का अनादर किया है। मैंने (मनमर्जी से) कुछ पशु बेच डाले जो मुझे बेचने नहीं चाहिए थे जिससे कि मेरी माता, मेरे भाई व उनके बच्चों को बहुत तकलीफ पहुँची, जिस कारण वह रोने लगे। मैंने अपने सुख के कारण उन्हें तकलीफ पहुँचाई। मैं इस गलती के लिए माफी माँगता हूँ। आगे से अपने भाई के प्रति कोई गलती नहीं करूंगा।

संत विवेकानन्द सीनियर सैंकण्डरी स्कूल केसूपुरा में माता - पिता दिवस

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी उपरोक्त स्कूल में माता - पिता दिवस बहुत उत्साह के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष के लिए, डाक्टर मिसिज़ सतिन्द्र ढिल्लों व गोपाल कृष्ण जी 9 फरवरी को पहुँच गए थे। 10 तारीख के साधन मन्दिर मल्लेकां में धर्म सम्बन्धी एकत्र हुए और सबने मिलकर एक सभा वा हितकर बातचीत की। सब धर्म सम्बन्धियों को माता - पिता दिवस पर आमन्त्रित किया गया।

संत विवेकानन्द स्कूल श्रीमान सरताज जी, जो पहले यहां प्रिंसीपल रहे हैं, अब सरकारी नौकरी में हैं और सुखदेव जी भी की मलकीयत है, दोनों समाज के उत्साही सेवक हैं, इसलिए वह गुरू महाराज की शिक्षा को अपने स्कूल में बच्चों और उनके माता - पिता तक पहुँचाना चाहते हैं ओर उसके लिए बहुत संग्राम करते हैं।

डॉक्टर सतिन्द्र ढिल्लों और गोपाल जी ने 10 तारीख को सारे प्रोग्राम का जायज़ा लिया और कुछ अच्छे सुझाव भी दिए। 11 फरवरी 10.30 बजे प्रोग्राम आरम्भ हुआ, जिसमें बच्चों ने वृद्धआश्रम, पिज्ज़ा डलिवरी boy, राम - दशरथ संवाद, श्रवण कुमार का मां बाप को तीर्थ यात्रा पर ले जाना वा दशरथ द्वारा वध, और अच्छी संगत द्वारा कृतघ्न बच्चे का कृतज्ञ बनना आदि वो बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया। इसके भिन्न बहुत सुन्दर भजनों का नृत्य द्वारा भी बहुत अच्छा वातावरण था। इंटरनेट व मोबाईल आदि के अनुचित उपयोग के विषय में भी प्रस्तुत की गई।

सारा प्रोग्राम बहुत प्रेरणादायक और दिलों को छूने वाला था। कुछ विद्यार्थियों वा अध्यापकों ने भी अपने अच्छे भावों का वर्णन किया।

इस प्रोग्राम में डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों जी मुख्य अतिथि थीं और माननीय श्रीमान बलबहादुर जी भी उपस्थित थे। श्रीमान जी ने देव समाज प्रबन्ध की ओर से स्कूल के स्टाफ, मैंनेजमैंन्ट, और विशेषकर डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों का धन्यवाद किया कि अपनी ख़राब सेहत के साथ भी वह इतना लम्बा सफर करके आई और प्रोग्राम में सहायक बनीं।

सारा प्रोग्राम देखकर उपस्थित एक सज्जन

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

श्री जागीर सिंह जी हांडा ने कहा कि बच्चों के इस प्रोग्राम ने मुझे किसी और ही दुनिया में पहुँचा दिया है। अन्त में डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों जी और माननीय श्रीमान बलबहादुर जी को शाल देकर सम्मानित किया।

इस प्रोग्राम में एक छोटी सी माता पिता के विषय में सभा का आयोजन था, जो नाटक का ही भाग था, उसे श्रीमान गोपाल जी ने बड़े प्रभावदायक ढंग से निभाया। जिसका प्रभाव बच्चों के अलावा उपस्थित जनों पर भी बहुत अच्छा पड़ा। उसके बाद सारे उपस्थित जनों को भोजन कराया गया।

निज का साधन करने की आवश्यकता

देवधर्म जीवन का धर्म है। जीवन धर्मगत हितअभिलाषा के उत्पन्न होने के बिना लाभ नहीं होता। जीवन संबन्धी हित अभिलाषा के उत्पन्न होने पर ही कोई जन ऐसे साधन जानना और पूरे करना चाहता है कि जिनसे जीवन का हित हो। साधन के बिना जीवन उन्नत नहीं होता। इसलिए प्रत्येक जीवनकांक्षी के लिए साधनशील होना आवश्यक है।

जो सेवक अथवा श्रद्धालु जन कर्मचारियों के साधनों में योग देने के अनंतर फिर आप कोई अभ्यास नहीं करते अथवा उनके शिक्षक जन उन्हें जो साधन बताते हैं, वह बिल्कुल या भली भांति पूरा नहीं करते, वह धर्म जीवन लाभ नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में वह नीचे की गति की ओर ही जाते हैं, और अपनी धर्म जीवन लाभ विषयक योग्यता को (यदि वह कुछ भी उनमें वर्तमान हो) धीरे-2 खोते जाते हैं। इसीलिए जो जन हमारी संगत में आकर और उनके साधनों में योग देकर भी अपनी उन्नति के लिये आप साधन करना आरम्भ नहीं करते और जो कुछ उनके शिक्षक जन उनकी भलाई के लिए उन्हें बताते हैं, उसे पूरा नहीं करते, वह उपरोक्त नियम के अनुसार जहां अपने जीवन की बहुत बड़ी हानि करते हैं, वहां कर्मचारियों के अति श्रेष्ठ और मूल्यवान परिश्रम को भी निष्फल करते हैं।

-श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts